



पीनीयस वनामेई में सफेद मल सिंड्रोम (डब्ल्यू एफ एस) का प्रबंधन

सफेद मल सिंड्रोम क्या है?

सफेद मल सिंड्रोम अर्थात वाइट फीकल सिंड्रोम (डब्ल्यू एफ एस) हाल के वर्षों में झींगा पालन के लिए एक गंभीर चिंता के रूप में उभरा है। इस सिंड्रोम से प्रभावित झींगा सफेद मल का उत्सर्जन करते हैं जिसकी वजह से इस सिंड्रोम का नाम डब्ल्यू एफ एस परा है। भा.कृ.अनु.प. - सी.आई.बी.ए. में किए गए अध्ययन से पता चलता है की डब्ल्यू एफ एस मुख्य रूप से एन्टेरोसाइटोजोन हेपैटोपीनी (ई एच् पी) प्रभावित वनामेई फार्म के साथ पाया जाता है। 2010 में थाईलैंड में किये अध्ययन में डब्ल्यू एफ एस के कारण 10 से 15% तक उत्पादन में कमी देखि गयी। जबकि 2015 के बाद भारत के पूर्वी तटीय राज्यों में 17% झींगा फार्म डब्ल्यूएफएस से प्रभावित पाए गए। उत्पादकता में कमी की वजह से यह बीमारी मध्यम से गंभीर आर्थिक नुकसान का कारण बन सकती है।



डब्ल्यूएफएस के नैदानिक संकेत क्या हैं?

तालाब की सतह पर तैरने वाले सफेद मल, डब्ल्यूएफएस का स्पष्ट संकेत है। आहार वाली ट्रे में सफेद मल के टुकड़े का पाया जाना भी इसका संकेत है। डब्ल्यूएफएस से प्रभावित झींगा सफेद मल का उत्सर्जन करता है और उसकी आंत सफेद / सुनहरे भूरे रंग का प्रतीत होता है। प्रभावित तालाबों में फ्रीड की खपत काफी कम हो जाती है। डब्ल्यूएफएस आमतौर पर कल्चर



के 30-40 दिनों के बाद स्पष्ट हो जाते हैं। प्रभावित तालाब 10 से 45 दिन या उससे अधिक अवधि के लिए सतह पर तैरते हुए सफेद मल के निशान दिखाते हैं, इसके साथ ही साथ एंफ्र. सी. आर. की उच्च दर, वृद्धि में कमी, आकार भिन्नता, ढीले खोल और झींगों की रोजाना मृत्यु अन्य लक्षण हैं। प्रभावित झींगा कम सक्रिय होते हैं और तालाब के सतह पर सुस्त रूप से तैरते हुए पाए जाते हैं।



डब्ल्यूएफएस का प्रेरक कारक क्या है?

डब्ल्यू एफ एस के कारणों का स्पष्ट रूप से पता नहीं चला है हालाँकि इसे एटीएम संरचनाओं, एन्टेरोसाइटोजून हेपैटोपीनी (ई एच पी), विब्रियोसिस एवं अन्य बैक्टीरिया जैसे कि कैंडीडेटस, बैसिलोप्लाज्मा, नीली हरी शैवाल और कवक के साथ जोड़ा गया है। आईसीएआर-सीआईबीए की अध्ययन में ई एच पी और डब्ल्यूएफएस को सम्बंधित पाया गया है।

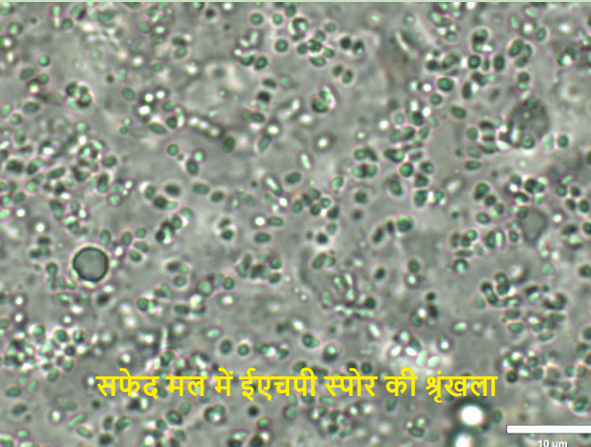
सफेद मल सिंड्रोम का प्रबंधन

डब्ल्यू एफ एस के प्रभाव को अच्छे प्रबंधन और सक्रिय जैव सुरक्षा उपायों द्वारा कम किया जा सकता है। बीमारी से प्रभावित अवधि के दौरान झींगा तालाबों में आहार को कम कर दिया जाना चाहिए। सफेद मल में ई. एच. पी. स्पोर की भारी संख्या पायी जाती है अतः प्रभावित



तालाबों से इसे हटा दिया जाना चाहिए। चूंकि झींगा हेपेटोपैक्रियाज में पुनर्जनन की अपार क्षमता पायी जाती है अतः कोशिका प्रसार को बढ़ाने वाली दवाओं जैसे टैरीन का उपयोग किया जा सकता है। चूंकि डब्ल्यू एफ एस प्रभावित तालाबों में ईएचपी की अत्यधिक संभावना होती है, इसलिए ईएचपी के रोकथाम के लिए सुझाए गए उपायों का पालन किया

जाना चाहिए। तालाब की तैयारी के लिए, प्रत्येक फसल के बाद सुखाने और कीटाणुशोधन जैसे प्रबंधन प्रथाओं (बीएमपी) का अनुपालन किया जाना चाहिए यह जीवाणुओं, विषाणुओं, बीमारी के वाहकों और ईएचपी स्पोर को नष्ट करने में मदद करेगा। क्लिक लाइम को 6 टन प्रति हेक्टर की दर से तालाब तलछट के उपचार के लिए सिफारिश की गई है। चूने की उच्च मात्रा का उपयोग आवश्यक है क्योंकि ईएचपी के स्पोर को पीएच 12 या उससे अधिक होने पर ही मिट्टी में नष्ट किया जा सकता है। इसे शुष्क तालाब तलछट (10-12 सेमी) में क्लिक लाइम को मिश्रित करने और फिर इसे सक्रिय करने के लिए तलछट को नम करने की सलाह दी जाती है। तालाब में जल भरने से पहले एक सप्ताह सुखाने के लिए छोड़ दिया जाना चाहिए। किसानों को यह भी सलाह दी जाती है कि वे अच्छे प्लवक वाले तालाबों में पीसीआर द्वारा परिच्छित किये गए ईएचपी- मुक्त बीजों का स्टॉक करें। हैचरी में, ईएचपी की अनुपस्थिति सुनिश्चित करने के लिए पीसीआर द्वारा परिच्छित जीवित खाद्य का उपयोग करें।



भा.कृ.अनु.प.- केंद्रीय खारापानी जलपालन अनुसंधान संस्थान

(आई एस ओ 9001: 2015 प्रमाणित)

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद,

कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार।

75, सैंथोम हाई रोड, एम आर सी नगर, चेन्नई 600 028 तमिलनाडु, भारत

Phone: +91 44 24618817, 24616948, 24610565 | Fax: +91 44 24610311

Web: www.ciba.res.in | Email: director.ciba@icar.gov.in, director@ciba.res.in



Follow us on : [f](#) [t](#) [v](#) /icarciba